भारतीय आधुनिक शिक्षा पत्रिका के वर्ष 2014 से 2019 तक प्रकाशित अंकों का बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण

पूजा जैन*
मीरा**

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) भारत का एक ऐसा संस्थान है, जो बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए तथा विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार एवं ई-संसाधन विकसित करता है। यह विद्यालयी शिक्षा का भारतवर्ष का राष्ट्रीय स्तर का संस्थान है, जो केंद्र एवं राज्य सरकारों को सहायता, सलाह एवं योजनाओं के क्रियान्वयन में सहायता करता है। 'भारतीय आधुनिक शिक्षा', रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित एक त्रैमासिक पत्रिका है, जो शोधार्थियों, शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों आदि को विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा से संबंधित नए विचारों, महत्वपूर्ण सर्वेक्षणों, शैक्षणिक समस्याओं और उनके समाधान के साथ-साथ अनुभवों और अनुसंधानों के परिणामों को विस्तार देने के लिए मंच प्रदान करती है। इस शोध पत्र में 'भारतीय आधुनिक शिक्षा' पत्रिका के वर्ष 2014 से वर्ष 2019 तक की ग्रंथ सूची का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ सूची के अध्ययन में विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जैसे— लेखों के वार्षिक प्रकाशन की संख्या, लेखकों के सहयोग का मूल्यांकन, प्रति लेख पृष्ठों की औसत लंबाई, प्रति लेख संदर्भों की संख्या एवं संदर्भों के प्रकार और संख्या इत्यादि। इस शोध पत्र में विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा से संबंधित विषयों में लिखे गए लेखों के विषयों की मैपिंग भी प्रस्तुत की गई है, जो पाठकों को इस पत्रिका के व्यापक स्वरूप को समझने एवं योगदान देने में मार्गदर्शित करेगी।

भारतीय आधुनिक शिक्षा एक त्रैमासिक (वर्ष में चार बार प्रकाशित होने वाली) पत्रिका है, जो कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, (रा.शै.अ.प्र.प.), नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित की जाती है। यह पत्रिका (जर्नल) शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थी-शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक-शिक्षा पर अपने मौलिक शैक्षिक विचार रखने का एक मंच प्रदान करती है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के विभिन्न आयामों में, विशेषकर *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के संदर्भ में, विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देना है। इस पत्रिका का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षा एवं शिक्षा से जुड़े सभी विषयों पर मौलिक एवं समीक्षात्मक चिंतन को प्रोत्साहित भी करना है। यह शोधकर्ताओं

* *सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष,* पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110016
** *एसोसिएट प्रोफेसर,* पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

से लेकर शिक्षा से जुड़ी नीति बनाने वालों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण सूचना का स्रोत है।

भारतीय आधुनिक शिक्षा

'*भारतीय आधुनिक शिक्षा*' पत्रिका हिंदी भाषा में स्कूली शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा से जुड़े हुए विभिन्न क्षेत्रों में हुए नवीनतम शोधों एवं विकास से संबंधित लेखों का प्रसार करने वाली मुख्य पत्रिकाओं में से एक है। इस पत्रिका का प्रथम अंक वर्ष 1983 जुलाई में प्रकाशित हुआ था। शुरुआती दौर में सभी लेखों को विषयों के अनुसार विभाजित कर अलग-अलग विषय सूची के अंतर्गत रखा जाता था। लेखों के साथ-साथ नीतिगत दस्तावेज़ों की समीक्षा एवं पुस्तक समीक्षा भी महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। इसका त्रैमासिक मूल्य 3 रूपये एवं वार्षिक मूल्य 12 रूपये था। भारत के स्कूली शिक्षा के क्षेत्र की महत्वपूर्ण पत्रिका ने वर्ष 2020 में 40 वर्ष पूरे कर लिए हैं, जोकि एक अकादमिक संस्थान के लिए एक उत्कृष्ट उपलब्धि है। इस शोध पत्र में *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका की वर्ष 2014–2019 की अवधि की ग्रंथ सूची का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस पत्रिका का आई.एस.एस.एन. नंबर 0972–5636 है। यह पत्रिका यू.जी.सी. केयर (कंसोर्टियम फॉर एकेडमिक एंड रिसर्च एथिक्स— के.ए.आर.ई.) सूची में वर्ष 2019 से शामिल की गई है। यू.जी.सी की अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में किसी पत्रिका को शामिल करने के लिए एक प्रक्रिया पूरी करनी होती है। जिसमें पत्रिका का नाम, आई.एस.एस.एन. नंबर, ई-आई.एस.एस.एन. नंबर, प्रकाशन संस्थान, प्रकाशन का स्थान, विशेषज्ञों द्वारा सहकर्मी समीक्षा, पत्रिका की वेबसाइट, लेखकों/समीक्षक के लिए दिशानिर्देश, पत्रिका के प्रकाशन की आवधिकता, पत्रिका का समय पर प्रकाशित होना आदि है। *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका एक गुणवत्तापरक पत्रिका है, क्योंकि यह पत्रिका पिछले 40 वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रही है। इसके अलावा यू.जी.सी. केयर सूची में शामिल होना भी एक पत्रिका की गुणवत्ता को दर्शाता है। एक अन्य आवश्यक विशेषता यह है कि यह पत्रिका स्कूली शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा से जुड़ी है, जो भारत की शिक्षा व्यवस्था को दृढ़ करने में भी योगदान देती है।

परिषद द्वारा अन्य पत्रिकाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं, जिनमें *प्राथमिक शिक्षक, जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, स्कूल साइंस, प्राइमरी टीचर, इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी तथा वॉइसेस ऑफ टीचर्स एंड टीचर एडुकेटर्स* शामिल हैं और ये सभी पत्रिकाएँ यू.जी.सी. केयर सूची में शामिल हैं। भारत जैसे विकासशील देश के लिए हिंदी में प्रकाशित यह एक ऐसी पत्रिका है जो यू.जी.सी. की केयर पत्रिकाओं की सूची में सूचीबद्ध है। यह पत्रिका शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थी-शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा पर अपने मौलिक शैक्षिक विचार रखने के लिए एक मंच प्रदान करती है। लेखकों द्वारा भेजे गए सभी लेखों, शोध पत्रों, पुस्तक समीक्षाओं आदि का प्रकाशन से पूर्व समकक्ष विद्वानों द्वारा पूर्ण निष्पक्षतापूर्वक पुनरीक्षण किया जाता है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के विभिन्न आयामों में,

विशेषकर *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के संदर्भ में, विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देना है। इस पत्रिका का एक अन्य उद्देश्य मौलिक एवं समीक्षात्मक चिंतन को भी प्रोत्साहित करना है। यह पत्रिका वर्ष 2010 से पूर्ण रूप से ओपन एक्सेस हेतु लिंक https://ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/bhartiyaadhunikshiksha पर उपलब्ध है।

किसी भी शिक्षा संस्थान की अकादमिक उत्पादकता प्रकाशित सामग्री से आँकी जा सकती है। इस पत्रिका में प्रकाशित लेख वर्तमान विषयों पर चर्चा करते हैं। *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका शोधकर्ताओं एवं शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस पत्रिका में शोध पत्र के साथ-साथ पुस्तक समीक्षाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं।

साहित्य की समीक्षा

ग्रंथ सूची (बिब्लिओमैट्रिक्स) के विषय पर अनेक शोध अध्ययन उपलब्ध हैं। यह एक ऐसा विश्लेषण का विषय है, जो एक संस्थान, एक विषय, एक पत्रिका या व्यक्ति विशेष के लिए भी किया जा सकता है। इस विश्लेषण में कुल लेखों की संख्या, लेखों की सालाना विकास दर, लेखकत्व पैटर्न, सबसे ज़्यादा लेख लिखने वाले लेखकों की सूची, सबसे ज़्यादा संदर्भों को प्रयोग में लाने वाले लेख, भौगोलिक आधार पर लेखों का योगदान (सबसे अधिक योगदान देने वाले देश व राज्य), प्रति लेख औसत पृष्ठ संख्या, प्रति लेख औसत संदर्भ संख्या इत्यादि। इस शोध पत्र में साहित्य की समीक्षा के उद्देश्य से केवल उन लेखों को शामिल किया गया है जो शिक्षा एवं शिक्षा से जुड़े हुए विषयों एवं विषयों की ग्रंथ सूची के विश्लेषण पर आधारित हैं।

अली (2018) ने गणित शिक्षा के क्षेत्र में ग्रंथ सूची विश्लेषण किया है। इस अध्ययन में वेब ऑफ साइंस (WoS) कोर कलेक्शन डेटाबेस से वर्ष 1980 से 2018 के मध्य गणित शिक्षा विषय क्षेत्र में प्रकाशित वैज्ञानिक शोधों का ग्रंथ सूची विश्लेषण किया गया एवं पाया गया कि 1980 से 2018 तक गणित की शिक्षा से जुड़े प्रकाशनों में वृद्धि हुई है। गणित शिक्षा के क्षेत्र में किए गए वैज्ञानिक कार्यों के उद्धरणों की संख्या के विश्लेषण में पाया गया कि अमेरिका, तुर्की और मलेशिया देशों के उद्धरण सबसे अधिक थे। शब्द विश्लेषण के अंतर्गत प्राथमिक गणित कक्षा, अध्यापक शिक्षा और उपलब्धि अंतर प्रमुख विषय पाए गए। गणित शिक्षा अनुसंधान क्षेत्र में जिन शब्दों का सबसे अधिक प्रयोग किया जाता है, वे क्रमशः गणित शिक्षा, विद्यार्थी और उपलब्धि थे।

जमाली, सैयद महबूबेह, मो ज़ैन अहमद नुरुलज़म, समसूदीन मोहम्मद अली एवं इब्राहिम, नादेर अली इब्राहिम (2015) ने 1980–2013 की अवधि में वेब ऑफ साइंस डेटाबेस का उपयोग करके 'भौतिकी शिक्षा' (फिजिक्स एजुकेशन) विषय पर प्रकाशनों की उत्पादकता और विकास तथा शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में भौतिकी शिक्षा विशेषज्ञों पर ध्यान केंद्रित कर विषयों का विश्लेषण किया। इस अध्ययन में 1360 प्रकाशनों को जाँचा गया, जिनमें 840 लेख, 503 कार्यवाही पत्र, 22 समीक्षाएँ, सात संपादकीय सामग्री, छह पुस्तक समीक्षा और एक जीवनी शामिल थी। 'भौतिकी शिक्षा' वाले प्रकाशनों की संख्या 1980 में 0.14 प्रतिशत से बढ़कर 2011 में 16.54 प्रतिशत हो गई।

उद्धरणों की कुल संख्या 8071 थी, जिसमें 5.93 प्रति पेपर उद्धरण दिए गए थे। परिणामों में पाया गया कि भौतिकी शिक्षा में प्रकाशन और उद्धरणों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और इसमें मलेशिया का सर्वोच्च योगदान पाया गया।

नायक (2017) ने रा.शै.अ.प्र.प., दिल्ली से प्रकाशित *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू* (आई.ई.आर.) पत्रिका का बिब्लियोमैट्रिक्स सांख्यिकीय विश्लेषण किया। उन्होंने 2011 से 2015 की अवधि के दौरान हुए प्रकाशनों और उद्धरण मानकों की जाँच करते हुए पाया कि अन्य प्रकार के प्रकाशनों में शोध पत्रों की संख्या (63) सबसे अधिक है, जैसे— अनुसंधान, नवाचार, पुस्तक समीक्षा, परियोजना सारांश और अन्य प्रकार के प्रकाशन आदि। इस पत्रिका हेतु भारत के अन्य राज्यों की तुलना में नई दिल्ली से आने वाले शोध पत्रों की संख्या सबसे अधिक थी। यह पत्रिका विशेष रूप से भारत में स्कूली शिक्षा के लिए समर्पित है तथा उद्धरण, मानकों, संरचना, लेखकत्व की विश्वसनीयता आदि के आधार पर यह एक प्रतिष्ठित पत्रिका है।

थानुस्कोडी (2010) ने सामाजिक विज्ञान विषयों पर सामाजिक वैज्ञानिकों के अनुसंधान आउटपुट प्रदर्शन का विश्लेषण किया। विश्लेषण में मुख्य रूप से लेखों की संख्या, लेखकत्व पैटर्न, लेखों का विषयवार वितरण, प्रति लेख संदर्भों की औसत संख्या, उद्धृत दस्तावेज़ों के रूप, उद्धृत पत्रिकाओं का वर्षवार वितरण आदि शामिल था।

वर्मा, पवार एवं जी (2016) ने भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान अर्धवार्षिक पत्रिका, जो सी.एस.आई.आर (राष्ट्रीय विज्ञान एवं सूचना स्रोत संस्थान) द्वारा प्रकाशित की जाती है, का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। यह पत्रिका हिंदी में प्रकाशित होती है। इसमें हिंदी भाषा में वैज्ञानिकों की लिखने की रुचि कम पाई गई।

अत: उक्त शोध अध्ययनों में सामाजिक विज्ञान एवं शिक्षा विषय पर जो बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण हुए हैं, उसी प्रकार से अन्य विषयों पर जैसे— पुस्तकालय विज्ञान, जीव विज्ञान, भाषा, शिक्षण शास्त्र, अनुसंधान आदि पर भी कई अनुसंधान हुए हैं, उदाहरण हेतु मोख्तारी और अन्य (2020) ने *जर्नल ऑफ डॉक्यूमेंटेशन* का ग्रंथ सूची अध्ययन किया, जो पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विषय की अग्रणी पत्रिका है। इस पत्रिका की 73 वर्षों की अवधि में कुल प्रकाशित 2056 लेखों एवं शोध पत्रों को स्कोपस डेटाबेस में पाया गया। यह शोध पत्र दर्शाता है कि इस पत्रिका में एल.आई.एस. क्षेत्र में नवीनतम विषयों को शामिल किया गया है और सह-लेखक का प्रचलन बढ़ा है। शुक्ला और वर्मा (2018) ने *जर्नल ऑफ लाइब्रेरी हेराल्ड* का वर्ष 2008–2017 की अवधि के दौरान प्रकाशित 222 लेखों का अध्ययन किया। इस शोध पत्र में लेखकत्व पैटर्न, भौगोलिक वितरण, संदर्भ वितरण और संदर्भों के लेखकीय पैटर्न का विश्लेषण किया गया। इसमें 97 लेख एकल लेखकत्व वाले पाए गए और 87 लेख संयुक्त लेखकों के पाए गए।

अध्ययन की आवश्यकता

विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय पत्रिकाओं पर कई ग्रंथ सूची अध्ययन हुए हैं, परंतु हिंदी में प्रकाशित पत्रिकाओं पर कुछ ही शोध पत्र उपलब्ध हैं। रा.शै.अ.प्र.प. जैसे राष्ट्रीय संस्थान की प्रमुख पत्रिका

भारतीय आधुनिक शिक्षा जो पिछले 40 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है, अत: इस पत्रिका का ग्रंथ सूची अध्ययन करने की अत्यंत आवश्यकता है। इसलिए इस शोधार्थी को पत्रिका का बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। यह शोध अध्ययन *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में प्रकाशित लेखों और लेखकत्व पैटर्न को समझने में सहायक होगा।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य थे—

- *भारतीय आधुनिक शिक्षा* के 2014–2019 की अवधि के दौरान प्रकाशन के विकास का अध्ययन करना।
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा* के लेखकत्व पैटर्न का अध्ययन एवं प्रकाशित लेखों में लेखकत्व सहयोग की डिग्री का माप करना।
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में सालाना प्रकाशित लेखों की लंबाई (पृष्ठ संख्या) के अनुसार लेखों का वितरण एवं प्रति लेख औसत पृष्ठ संख्या ज्ञात करना।
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में प्रकाशित लेखों में सूचीबद्ध संदर्भों की संख्या की गणना एवं प्रति लेख औसत संदर्भ की संख्या ज्ञात करना।
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में प्रकाशित लेखों में विभिन्न संदर्भों के प्रकार, उनकी गणना, प्रकाशित लेखों में सूचीबद्ध संदर्भों की संख्या के अनुसार वितरण करना।
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में योगदान पर भारत के राज्यवार सूची बनाना।
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विषयों की पहचान एवं विस्तृत मानचित्रण सूची प्रस्तुत करना।

क्रियाविधि

भारतीय आधुनिक शिक्षा के 2014 से 2019 की अवधि में प्रकाशित पत्रिकाओं की जानकारी रा.शै.अ.प्र.प. (https://ncert.nic.in/) की

तालिका 1— *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में लेखों का प्रकाशित अंकों के अनुसार वर्ष एवं मात्रावार वितरण (वर्ष 2014–2019)

खंड (अंक)	35	36	37	38	39	
वर्ष में प्रकाशित अंक	***2014–15***	***2015–16***	***2016–17***	***2017–18***	***2018–19***	***कुल लेख***
जुलाई (अंक 1)	11	09	12	11	12	55
अक्तूबर (अंक 2)	08	11	12	11	12	54
जनवरी (अंक 3)	10	11	11	12	11	55
अप्रैल (अंक 4)	10	11	12	10	11	54
कुल लेखों की संख्या	39	42	47	44	46	218
कुल लेखों का प्रतिशत	17. 89%	19. 27 %	21. 56 %	20 .18%	21 .10 %	100 (%)
संचयी लेखों की संख्या	39	81	128	172	218	–
पुस्तक समीक्षा की कुल संख्या	0	03	02	0	01	06

वेबसाइट से पब्लिकेशंस के अंतर्गत जर्नल्स एवं पीरियोडिकल्स पर उपलब्ध फुल टेक्स्ट आर्टिकल्स को डाउनलोड कर ली गई है।

विश्लेषण और व्याख्या

भारतीय आधुनिक शिक्षा पत्रिका की 2014 से 2019 की अवधि में प्रकाशित लेखों का विश्लेषण तालिका 1 में दर्शाया गया है—

तालिका 1 दर्शाती है कि वर्ष 2014–19 की अवधि के दौरान कुल 218 लेखों का प्रकाशन किया गया। इस तालिका में यह भी दर्शाया गया है कि पत्रिका में लेखों एवं शोध पत्रों के प्रकाशन के लिए मानक पैटर्न का पालन किया जा रहा है, जिसमें लेखों की संख्या 40 से 47 के आस-पास है। हालाँकि, वर्ष 2014–15 में सबसे न्यूनतम लेख 39 (17.89 प्रतिशत) और 2016–17 में सबसे अधिकतम 47 (21.56 प्रतिशत) लेख प्रकाशित हुए हैं। 2014 से 2019 के दौरान कुल छह पुस्तक समीक्षाएँ भी प्रकाशित हुई हैं।

सहयोग की डिग्री

इस लेख में *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका में सहयोग की डिग्री का विश्लेषण, लेखकों द्वारा कितने लेख एकल, कितने संयुक्त एवं कितने बहुलेखकीय लेख लिखे गए हैं, इसी का मापन करने के लिए सहयोग की डिग्री द्वारा मापन किया गया है। सहयोग की डिग्री को एक निश्चित अवधि के दौरान सहयोगी शोध पत्रों की संख्या और अनुशासन में शोध पत्रों की कुल संख्या के अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है। ग्रंथ सूची अध्ययनों (बिब्लिओमैट्रिक स्टडीज) में यह अनुसंधान का एक प्रमुख क्षेत्र है जो एकल और संयुक्त लेखकत्व में प्रवृत्तियों (ट्रेंड्स) को दर्शाता है। सहयोग की डिग्री से तात्पर्य संयुक्त रूप से या बहु-लेखक के सहयोग से लिखे गए शोध पत्रों और कुल लेखों की संख्या का अनुपात है। सहयोग की डिग्री (सी) को मापने का सूत्र इस प्रकार है—

$$C = \frac{\text{बहु-लेखक लेखों की संख्या (NM)}}{\text{बहु-लेखक लेखों की संख्या (NS) + एकल-लेखक लेखों की संख्या}}$$

$$C = \frac{67}{67+151}$$

$$C = \frac{67}{218}$$

$$C = 0.31$$

C— सहयोग की डिग्री

NM— बहु-लेखक लेखों की संख्या (एक से अधिक लेखक) (नम्बर ऑफ मल्टीपल ऑथर्स आर्टिकल्स)

NS— एकल-लेखक लेखों की संख्या (नम्बर ऑफ सिंगल ऑथर्स आर्टिकल्स)

तालिका 2— *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में प्रकाशित लेखों का लेखकत्व पैटर्न एवं प्रकाशित लेखों में लेखकत्व सहयोग की डिग्री का वर्षवार माप

वर्ष	एकल लेखक (1 लेखक)	संयुक्त लेखक (2 लेखक)	तीन लेखक (3 लेखक)	कुल लेखों की संख्या	C = NM/NM + NS	C
2014–15	30	09	0	39	9/39	0.23
2015–16	34	07	01	42	8/42	0.19
2016–17	34	13	0	47	13/47	0. 28
2017–18	25	18	01	44	19/44	0. 43
2018–19	28	17	01	46	18/46	0. 39
कुल	151	64	03	218	67/218	0. 31
%	69. 27	29. 36	1. 37	100		

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में 151 लेख (लगभग 70 प्रतिशत) पत्र एकल लेखक हैं और 2015–16 एवं 2016–17 में एकल लेखक के प्रकाशित लेखों की अधिकतम संख्या 34 है। 218 लेखों में से 64 (29.36 प्रतिशत) लेख दो लेखकों द्वारा मिलकर (ज्वाइंट ऑथरशिप) लिखे गए हैं। तालिका 2 में यह भी देखा जा सकता है कि तीन लेखकों का योगदान एक साथ केवल तीन ही लेखों में पाया गया है। विश्लेषण के दौरान यह पाया गया कि संयुक्त लेखकत्व में अधिकतम लेख 18 प्रकाशनों के साथ वर्ष 2017–2018 में प्रकाशित हुए थे।

तालिका 2 स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि कुल 67 लेख संयुक्त/बहु-लेखक में लिखे गए हैं और कुल एकल लेख 151 हैं। इसलिए सुब्रमण्यम (1983) द्वारा दिए गए C (सहयोग की डिग्री) को मापने के सूत्र का उपयोग किया गया है। यहाँ, पत्रिका के लेखन सहयोग की डिग्री 0.31 है। साथ ही, तालिका 2 से पता चलता है कि यह 2017–18 में 19 लेख हैं जो कि बहुलेखकीय हैं और उसकी सहयोग की डिग्री 0.43 है जो कि सभी पाँच वर्षों में सबसे अधिकतम है। तालिका 2 यह भी दर्शाती है कि इस पत्रिका में एकल लेख लिखना अधिकतर लेखकों (151) द्वारा पसंद किया गया है जबकि दो लेखकों ने मिलकर कुल 64 लेख लिखे हैं, जो लेखकों के बीच अकादमिक समन्वय एवं सहकारिता को दर्शाती है।

(*नोट*— इस पत्रिका की पृष्ठ संख्या कंटेंट पृष्ठ से शुरू होती है। लेकिन लेखों के विश्लेषण के दौरान पत्रिका के कुल पृष्ठों की संख्या में से सामग्री और संपादक के नोट के पृष्ठों को शामिल नहीं किया गया है ताकि औसत पृष्ठ प्रति लेख का मापन किया जा सके।)

तालिका 3 में प्रत्येक खंड के सभी लेखों की पृष्ठों की कुल संख्या दर्शाई गई है। कुल 218 लेखों में पृष्ठों की संख्या 2051 है। यह तालिका स्पष्ट करती है कि वर्ष 2017–18 में 454 पृष्ठों

तालिका 3— *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में वर्षवार प्रकाशित लेखों की लंबाई (पृष्ठ संख्या) के अनुसार लेखों का वितरण (2014–19) एवं प्रति लेख औसत पृष्ठ संख्या

वर्ष	1–5	6–10	11–15	16–20	21–25	कुल लेखों की संख्या	खंड में सभी लेखों के पृष्ठों की कुल संख्या	औसत पृष्ठ संख्या प्रति लेख	संचयी पृष्ठों की संख्या
2014–15	4	20	11	4	0	39	369	9.46	369
2015–16	4	25	11	1	1	42	399	9.50	768
2016–17	4	31	11	1	0	47	420	8 .94	1188
2017–18	2	22	18	2	0	44	454	10. 31	1642
2018–19	2	32	12	0	0	46	409	8. 89	2051
कुल	16	130	63	8	1	218	2051	9. 41	–

के साथ पृष्ठों की अधिकतम संख्या थी एवं औसत प्रति पृष्ठ लेख 10.31 थी, जो सभी पाँच वर्षों में सबसे अधिक है। जबकि इस वर्ष में लेखों की संख्या 44 है। सभी लेख औसत तौर पर 8 से 10 पृष्ठों के बीच में ही लिखे गए हैं। तालिका 3 से पता चलता है कि 218 लेखों में से 6–10 पृष्ठों में 130 लेख हैं जोकि अधिकतम संख्या है, वहीं 63 लेख 11–15 पृष्ठों की श्रेणी में हैं। केवल 8 लेख हैं, जो 16–20 पृष्ठों में प्रकाशित हुए हैं। मात्र एक लेख 21 पृष्ठ की लम्बाई का है जो जुलाई 2015 अंक में प्रकाशित हुआ है, यह एक खोजपरक लेख है। इस प्रकार संपूर्ण लेखों की औसत पृष्ठ संख्या प्रति लेख 9.41 है।

तालिका 4 सभी खंडों के लेखों में प्रयोग किए गए कुल संदर्भों की संख्या और प्रति लेख औसत संदर्भों की संख्या को दर्शाती है। यह तालिका बताती है कि वर्ष 2017–18 में 497 संदर्भों का प्रयोग हुआ

तालिका 4— *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में प्रकाशित लेखों में सूचीबद्ध संदर्भों की संख्या एवं प्रतिलेख औसत संदर्भों की संख्या

वर्ष	कुल लेखों की संख्या	कुल संदर्भों की संख्या	प्रति लेख औसत संदर्भों की संख्या
2014–15	39	374	9.589
2015–16	42	313	7.452
2016–17	47	382	8.127
2017–18	44	497	11.30
2018–19	46	412	8.956
5 वर्ष	218	1978	9.115

है जो कि पाँच वर्षों में सबसे अधिक है एवं इसी वर्ष प्रति लेख औसत संदर्भों की संख्या भी 11.30 है, जो सभी पाँच वर्षों में सबसे अधिक है।

भारतीय आधुनिक शिक्षा में प्रकाशित लेखों में विभिन्न संदर्भों के प्रकार एवं संख्या

तालिका 4 में सभी लेखों के लिखने में जिन संदर्भों का प्रयोग किया गया है उन्हें मुख्य रूप से 19 श्रेणियों में विभाजित किया गया है। संदर्भों की सूची का विश्लेषण करने का उद्देश्य यह है कि लेखकों द्वारा किस प्रकार के संसाधनों का प्रयोग एवं कितनी मात्रा में किया गया है।

तालिका 5.1 के अनुसार लेखकों द्वारा पुस्तकों का उपयोग संदर्भ रूप में सबसे अधिक (784 पुस्तकें) किया है, उसके बाद पत्रिका लेखों (356 संख्या) का संदर्भ के रूप में उपयोग किया है। आज के इंटरनेट युग में वेबलिंक्स अर्थात इंटरनेट से सामग्री

तालिका 5.1— *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में प्रकाशित लेखों में विभिन्न संदर्भों के प्रकार, संख्या/मात्रा, प्रकाशित लेखों में सूचीबद्ध संदर्भों की संख्या के अनुसार वितरण

संदर्भ के प्रकार	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	कुल
पत्रिका लेख	71	26	76	101	82	356
पुस्तक	152	155	153	143	181	784
रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकें	17	01	16	0	03	37
रा.शै.अ.प्र.प. की अन्य पुस्तकें	07	11	9	07	09	43
समाचार पत्र	07	14	13	0	02	36
रा.शै.अ.प्र.प. सर्वे	04	0	1	15	02	22
एन.सी.एफ. 2005	06	10	22	21	27	86
रा.शै.अ.प्र.प. के अलावा पाठ्यचर्या	0	10	0	0	02	12
रा.शै.अ.प्र.प. रिपोर्ट्स	3	01	4	10	02	20
एम.एच.आर.डी. रिपोर्ट्स	04	07	3	11	09	34
अन्य रिपोर्ट्स	27	09	16	55	21	128
आर.टी.ई. एक्ट	07	07	2	02	0	18
अन्य एक्ट एवं नीतियाँ	05	03	0	0	0	08
शब्दकोश/विश्वकोश	13	02	0	0	0	15
थीसिस (शोध प्रबंध)	5	04	7	27	02	45
एन.सी.टी.ई. संसाधन/सामग्री	02	04	3	11	05	25
वेबलिंक्स	43	46	49	90	44	272
अन्य प्रकाशन/ सामग्री	01	03	1	03	14	22
मल्टीमीडिया	0	0	7	01	07	15
कुल	374	313	382	497	412	1978

का 272 लेखों में उपयोग, तीसरे स्थान पर रहा है। जबकि रिपोर्ट्स 128 संदर्भों के साथ चौथे स्थान पर है, वहीं एन.सी.एफ. 2005 पाँचवें स्थान पर है। वर्ष 2017–18 में सबसे अधिक 497 संदर्भों का प्रयोग हुआ है एवं 2018–19 में 412 संदर्भों का प्रयोग हुआ है।

तालिका 5.2 दर्शाती है कि 218 में से 36 लेख ऐसे भी हैं जिनमें संदर्भों का प्रयोग नहीं किया गया है अर्थात शून्य है। जबकि दो लेख जिनमें क्रमशः 49 (वर्ष 2014 –15) और 41 (वर्ष 2017–18) में संदर्भों का प्रयोग किया गया है जो कि अधिकतम है। इसके अलावा यह तालिका दर्शाती है कि लेखों में सबसे ज़्यादा 1–5 संदर्भों, 6–10 संदर्भों व 11–15 संदर्भों का प्रयोग क्रमशः 51, 49 व 45 लेखों में किया गया है।

तालिका 6 से यह ज्ञात होता है कि शोध अध्ययन की कुल अवधि (2014–2019) के दौरान प्रकाशनों की संख्या के आधार पर सबसे अधिक

तालिका 5.2– *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में प्रकाशित लेखों में सूचीबद्ध संदर्भों की संख्या के अनुसार वितरण

वर्ष	0	1–5	6–10	11–15	16–20	21–25	26–30	>30	कुल लेखों की संख्या
2014 –15	8	10	05	09	02	03	01	01	39
2015 –16	10	10	10	07	03	02	0	0	42
2016 –17	13	04	14	08	05	03	0	0	47
2017 –18	03	11	06	14	04	03	02	01	44
2018 –19	02	16	14	07	03	02	02	0	46
कुल लेखों की संख्या	36	51	49	45	17	13	05	02	218
प्रतिशत	16. 51	23. 39	22.48	20. 64	7. 80	5. 96	2.30	0.92	100 (%)

तालिका 6— भारत के राज्यों/ केंद्रशासित प्रदेशों का *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में लेखों के रूप में योगदान की सूची

क्रमांक	राज्य/केंद्रशासित प्रदेशों का नाम	लेखों की संख्या	संचयी लेखों की संख्या	%
1.	दिल्ली	71	71	32.57
2.	उत्तर प्रदेश	43	114	19.72
3.	उत्तराखण्ड	25	139	11.47
4.	राजस्थान	23	162	10.55
5.	मध्य प्रदेश	20	182	9. 17

6.	महाराष्ट्र	14	196	6.42
7.	पश्चिम बंगाल	4	200	1. 83
8.	गुजरात	4	204	1. 83
9.	बिहार	4	208	1. 83
10.	हरियाणा	3	211	1. 38
11.	हिमाचल प्रदेश	2	213	0.91
12.	झारखण्ड	1	214	0.46
13.	आंध्र प्रदेश	1	215	0.46
14.	छत्तीसगढ़	1	216	0.46
15.	पंजाब	1	217	0.46
16.	जानकारी नहीं	1	218	0.46

उत्पादक राज्य दिल्ली है जहाँ से कुल 71 लेख लेखकों द्वारा दिए गए हैं। 43 लेखों के साथ दूसरे स्थान पर उत्तर-प्रदेश एवं तीसरे स्थान पर उत्तराखंड है जिसके पत्रिका में 25 लेख शामिल हैं।

इन लेखों को जाँचने से यह जानकारी भी प्राप्त हुई कि 218 लेखों में से 28 लेख रा.शै.अ.प्र.प. के अकादमिक सदस्यों के द्वारा लिखे गए हैं। 26 एन.आई. ई., दिल्ली और दो आर.आई.ई. भोपाल के अकादमिक सदस्यों द्वारा लिखे गए हैं।

तालिका 7— *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विषयों की पहचान एवं विस्तृत मानचित्रण सूची

क्रमांक	विषय	लेखों की संख्या
1.	शिक्षण-अधिगम	18
2.	शिक्षा दर्शन	15
3.	अध्यापक शिक्षा	13
4.	भाषा शिक्षा	13
5.	प्राथमिक शिक्षा	11
6.	विद्यालयी शिक्षा	11
7.	समावेशी शिक्षा	09
8.	पाठ्यपुस्तक अध्ययन	08
9.	उच्च शिक्षा	06
10.	बालिका/ स्त्री शिक्षा	06
11.	आई.सी.टी.	06
12.	मूल्य शिक्षा	05
13.	शिक्षा व्यवस्था	05
14.	जेंडर परिप्रेक्ष्य	05
15.	शिक्षा का अधिकार	05
16.	कला शिक्षा	05
17.	बाल विकास	05
18.	पर्यावरण शिक्षा	04
19.	विज्ञान शिक्षण	04
20.	अकादमिक उपलब्धि	03
21.	ग्रामीण शिक्षा	03

सभी 218 लेखों का 21 विषयों के आधार पर वर्गीकरण किया गया, जिसे तालिका 7 में दर्शाया गया है। प्राथमिक रूप से शिक्षण-अधिगम विषय पर 18 लेख, शिक्षा दर्शन पर 15 और अध्यापक शिक्षा एवं भाषा शिक्षा पर 13 लेख हैं।

उक्त विषयों के अलावा शिक्षा से संबंधित अन्य विषयों पर भी लेख हैं परंतु उनकी संख्या एक या दो ही है, जैसे— करियर सजगता, बाल श्रम, बच्चों का व्यवहार, बाल उत्पीड़न, ड्रॉपआउट चिल्ड्रन, किशोरावस्था शिक्षा, शिक्षा नीति, शिक्षा का निजीकरण, दूरस्थ शिक्षा, कौशल शिक्षा, योग की शिक्षा में भूमिका, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, अल्पसंख्यकों की शिक्षा, मध्याह्न भोजन, शिक्षा की गुणवत्ता, रोज़गार उन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता, अध्यापक प्रशिक्षण, गणित शिक्षा, कक्षाई शिक्षाशास्त्र, शांति शिक्षा, अध्यापक-विद्यार्थी अनुपात, शिक्षण प्रक्रिया, अनुसूचित जनजाति शिक्षा, शिक्षण पद्धति, शिक्षा में खेल की भूमिका, शिक्षण, पढ़ने की प्रक्रिया, प्रौढ़-शिक्षा एवं अन्य विषयों को भी शामिल किया गया है। इस प्रकार यह पत्रिका शिक्षा से संबंधित विषयों में नवीनतम जानकारी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

तथ्यों के विश्लेषण और गणना के आधार पर प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष और परिणाम इस प्रकार हैं—

1. अध्ययन की अवधि के पाँच वर्षों में (2014–2019) के दौरान लेखकों का वर्षवार वितरण कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित किया गया है एवं पाया गया की कुल 218 लेख प्रकाशित किए गए हैं जो की वर्ष 2016–17 में सबसे अधिकतम हैं एवं वर्ष 2014–15 में सबसे कम हैं।
2. वर्ष 2014–2019 में *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में कुल 218 लेखों का योगदान 288 लेखकों द्वारा किया गया है एवं कुल 218 लेखों में से 151 एकल लेखक द्वारा, 64 संयुक्त लेखकों द्वारा एवं तीन लेख तीन लेखकों ने मिलकर लिखे हैं। पाँच वर्षों के अध्ययन के दौरान सहयोग की औसत डिग्री 0.31 है। वर्ष 2017–18 में 19 लेख प्रकाशित हुए हैं, जोकि बहुलेखकीय हैं और सहयोग की डिग्री 0.43 है, जो सभी पाँच वर्षों में सबसे अधिकतम है।
3. *भारतीय आधुनिक शिक्षा* के प्रत्येक खंड के सभी लेखों की पृष्ठों की कुल संख्या 2051 है एवं औसत प्रति लेख पृष्ठ संख्या 9.41 है।
4. लेखों में प्रयोग किए गए कुल संदर्भों की मात्रा 1978 पाई गई और प्रति लेख औसत संदर्भों की संख्या 9.12 है।
5. *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में अध्ययन की अवधि (2014 –2019) के दौरान कुल 218 प्रकाशित लेखों में विभिन्न संदर्भों का प्रयोग किया गया है, जिन्हें मुख्य रूप से 19 श्रेणियों में विभाजित किया गया एवं पाया गया कि पुस्तकों का उपयोग संदर्भ के रूप में सबसे अधिकतम (784 पुस्तक) हुआ है। जिसके बाद पत्रिका लेखों का (356 संख्या) संदर्भ के रूप में उपयोग हुआ है। संदर्भों का विश्लेषण करते हुए यह भी पाया गया कि आज के इंटरनेट युग में वेबलिंक्स अर्थात इंटरनेट से सामग्री का (272) लेखों में उपयोग, तीसरे स्थान पर रहा। वर्ष 2017–18 में सबसे अधिक संदर्भों का (497) प्रयोग हुआ है।

6. अध्ययन की कुल अवधि के दौरान प्रकाशनों की संख्या के आधार पर सबसे अधिकतम लेख दिल्ली क्षेत्र से प्रकाशित हुए हैं जिनकी संख्या 71 है, दूसरे स्थान पर उत्तर प्रदेश एवं तीसरे स्थान पर उत्तराखंड है, जिसके क्रमशः 43 व 25 लेख शामिल हैं। इस प्रकार *भारतीय आधुनिक शिक्षा* में कुल 15 राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेशों का योगदान शामिल है।
7. सभी 218 लेखों का 21 विषयों के आधार पर वर्गीकरण किया गया। इसमें शिक्षण-अधिगम विषय पर 18 लेख, शिक्षा दर्शन पर 15 लेख, अध्यापक शिक्षा एवं भाषा शिक्षा पर 13 लेख पाए गए हैं।

निष्कर्ष

भारतीय आधुनिक शिक्षा रा.शै.अ.प्र.प. की एक नियमित और प्रतिष्ठित पत्रिका है और शोधार्थियों एवं शिक्षाविदों के लिए बहुत उपयोगी है। वर्ष 2014–19 की अवधि के दौरान 20 खंडों में प्रकाशित *भारतीय आधुनिक शिक्षा* पत्रिका की ग्रंथ सूची के अध्ययन के परिणामस्वरूप प्रकाशित लेखों की संख्या 218 है। हालाँकि अधिकतर खंड 10–12 लेखों के साथ हैं, जिसमें लेख के अलावा छह पुस्तक समीक्षाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। 218 में से 151 योगदानों के साथ एकल लेखकत्व को सबसे अधिक महत्ता दी गई है और लेखकत्व सहयोग 0.31 पाया गया है। 130 लेखों की लंबाई 6–10 पृष्ठ के बीच में है जो अधिकतम है, जबकि 11–15 पृष्ठ वाले लेख 63 हैं। लेख संदर्भों की औसत संख्या 9.12 है, जबकि शून्य संदर्भ वाले 36 लेख पाए गए। भारतीय विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन के लिए यह पत्रिका बहुत महत्वपूर्ण है। यह पत्रिका वर्ष 2019–20 में 40 साल की यात्रा पूरी कर चुकी है, जो प्रकाशन की लंबी स्थिरता को दर्शाता है। यह पत्रिका पेशेवरों और शोधार्थियों को अपने शोध अध्ययनों और अनुभवों को शोध पत्रों के रूप में प्रकाशित करने का समान अवसर देती है।

संदर्भ

एस. थानुस्कोडी. 2010. जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज— ए बिब्लियोमैट्रिक स्टडी. *जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज*. 24:2, पृष्ठ संख्या 77–80. DOI: 10.1080/09718923.2010.11892847

ओज़्काया, अली. 2018. गणित शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन का ग्रंथ सूची विश्लेषण. *एजुकेशनल रिसर्च एंड रिव्यूज*. 13 (22), पृष्ठ संख्या 723–734.

जमाली, सैयद महबूबेह, मो ज़ैन अहमद नुरुलज़म, समसूदीन मोहम्मद अली और इब्राहिम, नादेर अली इब्राहिम. 2015. पब्लिकेशन ट्रेंड्स इन फिजिक्स एजुकेशन— ए बिब्लिओमैट्रिक स्टडी. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*. 35, पृष्ठ संख्या 19–36.

नायक, ए. पी. 2017. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू— ए बिब्लियोमेट्रिक्स स्टडी. *इंपीरियल जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च*. 3, पृष्ठ संख्या 88–91.

मोख्तारी, हैदर, बरखान, एस, हसेली, डी और एम.के. सबेरी. 2020. जर्नल ऑफ डॉक्यूमेंटेशन का एक ग्रंथ सूची विश्लेषण और विजुअलाइजेशन— 1945–2018. *जर्नल ऑफ डॉक्यूमेंटेशन*. 77(1), पृष्ठ संख्या 69–92.

https://doi.org/10.1108/JD-08-2019-0165

वर्मा, मोनिका, यतीश पवार और जी. महेश. 2016. भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्यौगिक अनुसंधान पत्रिका— बिब्लिओमैट्रिक विश्लेषण. *भारतीय वैज्ञानिक एवं औद्यौगिक अनुसंधान पत्रिका.* 24(2) पृष्ठ संख्या 153–158.

शुक्ला, रवि और मनोज कुमार वर्मा. 2018. लाइब्रेरी हेराल्ड 2008–2017— एक ग्रंथ सूची अध्ययन. *लाइब्रेरी फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस (ई-जर्नल).* 1762 https://digitalcommons.unl.edu/libphilprac/1762 https://creativemanitoba.ca/topic/types-and-degrees-of-collaboration/

सुब्रमण्यम, के. 1983. बिब्लिओमैट्रिक स्टडीज ऑफ रिसर्च कोलेबोरेशन. ए रिव्यू— जर्नल ऑफ इनफॉर्मेशन साइंस. 6 पृष्ठ संख्या 33–38. https://digitalcommons.unl.edu/libphilprac/2448 22 जुलाई 2021 को https://doi.org/10.1108/LHTN-03-2016-0014, 23 जुलाई 2021 https://ncert.nic.in/journals-and-periodicals.php?ln, 24 जुलाई 2021 को UGC_Journal_Help.pdf, 13 अक्तूबर 2021 को ncert.nic.in/pdf/publication/journalsandperiodicals/bhartiyaadhunikshiksha/BAS_जुलाई 2014– अप्रैल 2020. pdf जुलाई से सितंबर तक देखा.